10. डॉ. शङ्करदेव अवतरे

डॉ. शङ्करदेव अवतरे का जन्म सन् 1921 ई. में ग्राम करैना, पोस्ट-शिकारपुर, जनपद-बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आचार्य, एम. ए., पीएच.डी. तथा डी.लिट्. की उपाधि से समलंकृत डॉ. अवतरे मोतीलाल नेहरू कॉलेज (सान्ध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के अवकाश प्राप्त आचार्य हैं। इन्होंने संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनके बहुचर्चित काव्यों में 'नारीगीतम्'- संस्कृत अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत और 'जीवनमुक्तकम्'- संस्कृत अकादमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत ग्रन्थ हैं। 'नारीगीतम्'-काव्य में स्त्री की शक्ति और नारीतत्त्व के स्वरूप का प्रतिपादन है। भारतीय समाज में स्त्री के प्रति इस समय हो रहे अनाचार के प्रति कवि सम्वेदना अभिव्यक्त करते हुए उसे दूर करने के लिए कहता है–

नार्यास्तिरस्कृतिरहेतुकयन्त्रणा वा
यस्मिन् कुले भवति तत् कुलमेव नष्टम्।
समाभिशप्तिरखिलं विकृतं समाजं
चाणक्यनीतिरपि नन्दकुलं क्षिणोति॥

कवि द्वारा विरचित 'जीवनमुक्तकम्' में विभिन्न छन्दों में गुम्फित 375 पद्य हैं। इनमें कवि ने युगानुरूप चिन्तन, नीति और अपने जीवनदर्शन को अभिव्यक्त किया है। काव्य में श्लोकों में अन्योक्तियाँ स्पृहणीय हैं। किसी जुगुप्सित व्यक्ति के लिए मेढक के बहाने अन्योक्ति करते हुए कवि अवतरे का कथन है–

मण्डूकः स्नापितः सन् सुरभितसलिलैः स्थापितो हेमपीठे
द्रष्टुः प्रावार्यदृष्टिं पुनरपि सहसा कूर्दते कच्चरेषु।
एवं नीचः प्रकृत्या शतशतगुरुभिर्दीक्षितोऽनेकवारं
आत्मानं येनेकेनाप्यनुचितविधिना पातयत्येव पापे॥

इन काव्यों के अतिरिक्त कवि ने हिन्दी में भी कई ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें 'साहित्यशास्त्रीय समाधान'- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, 'रस-प्रक्रिया'- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, साधारणीकरण, काव्याङ्गप्रक्रिया, अलङ्कारप्रक्रिया तथा शिखरिणीशतकम् प्रभृति उल्लेखनीय हैं। सन् 1998 ई. के वरिष्ठ संस्कृत सेवा सम्मान से कवि को समलंकृत किया गया है।

Scanned by CamScanner